500th Birth Anniversary of Rani Durgavati

Rani Durgavati, the descendant of the famous Chandela dynasty of Mahoba, and the queen of the Gond kingdom of Garha-Katanga, took on the might of the Mughal Empire with great courage and leadership.

Gond tribe is a prominent tribe in central India known for their rich cultural heritage and resilience. Rani Durgavati, like many other women of her times, chose to embrace death rather than falling into the hands of the enemy. It is said that since she was born on the festival of Durgashtami, her parents named her Durgavati, after the fierce Hindu goddess Durga. She proved to be a human embodiment of the deity. She is remembered today for her sacrifices and as a defender of her culture and a symbol of pride and honour.

Durgavati was born on 5 October 1524 in Kalinjar, one of the most important forts of medieval India, which lies in the Banda district of the state of Uttar Pradesh. It was held by her father Raja Salbahan of Ratha and Mahoba, a scion of the famous Chandelas who had built the Khajuraho temples and had rebuffed the attacks of Mahmud Ghazni in the past. At the age of 18, she was married to Dalpat Shah, son of the Gond King Sangram Shah of Garha-Katanga, strengthening an alliance between the two royal families.

The small kingdom of Garha-Katanga emerged in central India in the aftermath of Timur's invasion (1398), when the feeble Sultanate rule over this region was thrown off by King Yadavrai. The name of the kingdom was derived from the principal town called 'Garha' and a village called 'Katanga' located 4 miles west of the city of Jabalpur.

Dalpat Shah died in the year 1548, leaving behind a minor son, Bir Narayan, as the heir. Rani Durgavati installed Bir Narayan on the throne and she took on the reins of the government. She was assisted by two able ministers, Adhar Kayastha and Man Brahman. Rani Durgavati administered the kingdom and took it to such high levels of prosperity that people paid taxes in gold coins and elephants. She constructed reservoirs such as the Ranital, Cherital and Adhartal, for the benefit of her people. She was a patron of learning, and allowed Acharya Bitthalnath to establish a seat of the Pushtimarg cult at Garha.

Rani Durgavati consolidated the boundaries of her kingdom. She personally led her army to quell rebellions. Her kingdom stretched 300 miles from east to west and 160 miles from north to south. According to a contemporary Persian source, the *Tarikh-i-Firishta*, Durgavati repulsed Baz Bahadur, the ruler of Malwa, who had attacked her kingdom between 1555 and 1560.

The Mughal Governor of Kara-Manikpur, Asaf Khan, launched a completely unprovoked attack on Rani's kingdom in 1564. Equipped with a large imperial army, Asaf Khan marched into Garh-Katanga and arrived at Damoh. Durgavati with her small force was able to defeat the Mughals and push back them at least three times. However, the Mughals regrouped with a strong contingent comprising 10,000 cavalry, infantry and artillery and overwhelmed her forces.

The Rani continued fighting until two arrows struck her, one in her right temple and the other in her neck. She pulled them out but fell unconscious. On regaining consciousness, she realised that she had lost the day. She asked her mahavat, Adhar Baghela, to kill her with his dagger. Baghela refused but offered to take her to a safe place. The Rani realised that they would not be able to go too far and would soon fall into the hands of the enemy. She now took out her dagger and stabbed herself in her heart. Thus, on the 24 June, 1564, died the brave Rani Durgavati who chose death against dishonour. Her men cremated her in a narrow mountain pass some 12 miles from Jabalpur.

The Mughal encounter with the Rani was documented by Abul Fazl, Akbar's chronicler and other Persian writers. Abul Fazl wrote of Durgavati that she was a combination of beauty, grace and manlike courage and bravery. The story of Durgavati was also chronicled many years later by the British Colonel, Sleeman, who spoke about the Rani as being the most revered of all sovereigns who ruled over Garh-Katanga.

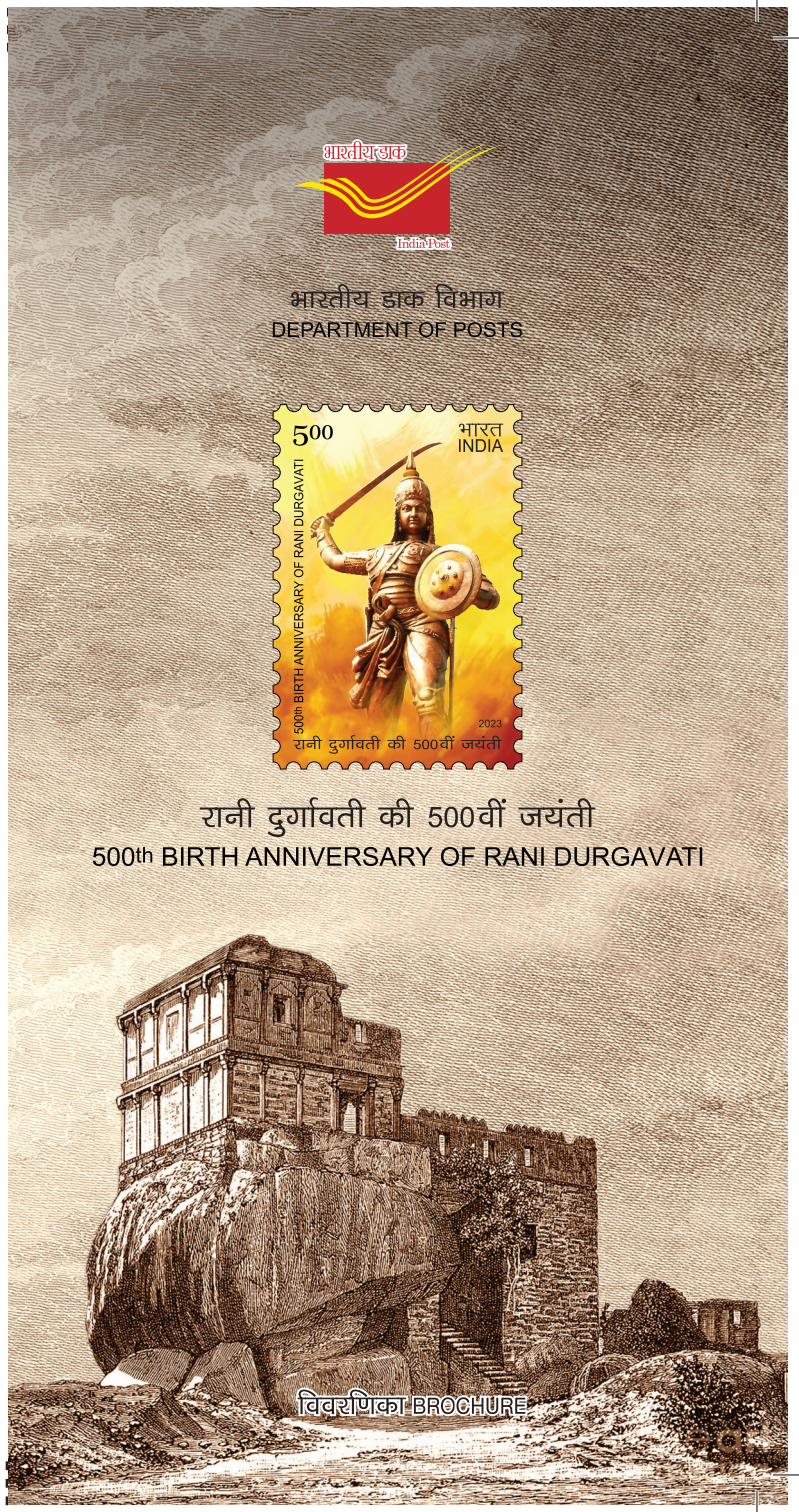
A memorial of Rani Durgavati has been built in Jabalpur at the same place where the Rani had attained martyrdom. A ceremony is held here on 24 June each year, which is celebrated as 'Balidan Divas' or Martyr's Day, in honour of the Rani. In 1983 the name of Jabalpur University was changed to Rani Durgavati University and a museum has been named after her.

In 1988 a postage stamp was issued in her honour. In 2018, the Indian Coast Guard commissioned the 3rd Inshore Patrol Vessel (IPV) called 'ICGS Rani Durgavati' at its district headquarters in Vishakapatnam. However, the most enduring memorial of the Rani is the collective memory of the people, where she has found a place of great regard. Her story has become a legend which forms the theme of songs and tales, through which she stays alive in the hearts of the people every day.

Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on 500th Birth Anniversary of Rani Durgavati and pay homage to this icon of national pride and sacrifice who continues to inspire the youth and millennials during Amritkaal.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Sh. Sankha Samanta
Text	:	Based on information received from Ministry of Culture



रानी दुर्गावती की 500वीं जयंती

'रानी दुर्गावती', महोबा के प्रसिद्ध चंदेल राजवंश की वंशज और गढ़–कटंगा के गोंड साम्राज्य की रानी थी। उन्होंने ताकतवर मुगल साम्राज्य से लोहा लिया और अपने साहस और नेतृत्व का शानदार परिचय दिया।

गोंड जनजाति, मध्य भारत की एक प्रमुख जनजाति है जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और दम–खम के लिए जानी जाती है। रानी दुर्गावती ने अपने दौर की अनेक अन्य महिलाओं की तरह, दुश्मन के हाथों में पड़ने के बजाय मौत को गले लगाने को बेहतर समझा। रानी दुर्गावती का जन्म दुर्गाष्टमी के दिन हुआ था, कहा जाता है कि इसीलिए उनके माता–पिता ने उनका नाम हिंदू देवी दुर्गा के नाम पर दुर्गावती रखा। वे मानो मानव के रूप में साक्षात दुर्गा का अवतार थी। रानी दुर्गावती को आज भी उनके बलिदानों के लिए और संस्कृति की रक्षक के रूप में याद किया जाता है। उनका नाम इतिहास के पन्नों में गौरव और सम्मान के पर्याय के रूप में दर्ज है।

रानी दुर्गावती का जन्म 5 अक्तूबर 1524 को कालिंजर में हुआ। कालिंजर, मध्यकालीन भारत के सबसे महत्वपूर्ण किलों में से एक था, यह किला, उत्तर प्रदेश राज्य के बांदा जिले में स्थित है। कालिंजर किले पर रानी दुर्गावती के पिता तथा रथ और महोबा के राजा सालबाहन का शासन था, जो उन प्रसिद्ध चंदेल राजाओं के वंशज थे, जिन्होंने खजुराहो के मंदिरों का निर्माण कराया था और पूर्व में महमूद गजनी के हमलों को निष्फल कर दिया था। 18 वर्ष की उम्र में रानी दुर्गावती का विवाह गढ़–कटंगा के गोंड राजा संग्राम शाह के बेटे दलपत शाह से हुआ। इस विवाह से दोनों शाही परिवारों के बीच संबंध प्रगाढ़ हुए।

गढ़–कटंगा की यह छोटी सी रियासत राज्य मध्य भारत में तैमूर के आक्रमण (वर्ष 1398) के बाद उस समय उभरी, जब उस दौर की कमजोर सल्तनत शासन को राजा यादवराय ने उखाड़ फेंका। इस रियासत का नाम 'गढ़' नामक प्रमुख शहर और जबलपुर शहर से 4 मील पश्चिम में स्थित 'कटंगा' नामक गाँव से लिया गया।

वर्ष 1548 में दलपत शाह की मृत्यु हो गयी और वे अपने पीछे अपने नाबालिग पुत्र वीर नारायण को उत्तराधिकारी के रूप में छोड़ गये। रानी दुर्गावती ने वीर नारायण को राजगद्दी पर बैठाया और प्रशासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली। इस कार्य में रानी दुर्गावती की मदद उनके दो योग्य मंत्रियों, अधर कायस्थ और मान ब्राह्मण द्वारा की गई। रानी दुर्गावती ने कुशल प्रशासन के बल पर रियासत को इतना समृद्ध बना दिया कि लोग, कर का भुगतान सोने के सिक्कों और हाथियों से करने लगे। रानी दुर्गावती ने अपनी प्रजा के हित को ध्यान में रखते हुए रानीताल, चेरीताल और अधारताल जैसे जलाशयों का निर्माण करवाया। रानी दुर्गावती ज्ञान और अध्ययन को प्रोत्साहित करती थीं और उन्होंने आचार्य विट्ठलनाथ को गढ़ में पुष्टिमार्ग पंथ की पीठ स्थापित करने की अनुमति दी।

रानी दुर्गावती ने अपने राज्य की सीमाओं को सुदृढ़ किया तथा विद्रोहों को कुचलने के लिए अपनी सेना की कमान स्वयं संभालकर उसका नेतृत्व किया। उनका राज्य पूर्व से पश्चिम तक 300 मील और उत्तर से दक्षिण तक 160 मील तक फैला हुआ था। एक समकालीन फारसी स्रोत, *तारीख़–ए–फ़रिश्ता* के अनुसार, रानी दुर्गावती ने मालवा के शासक बाज बहादुर को बुरी तरह शिकस्त दी, जिसने 1555 और 1560 के बीच उनके राज्य पर हमला बोला था।

वर्ष 1564 में, कारा–मानिकपुर के मुगल गवर्नर आसफ खान ने रानी दुर्गावती की रियासत पर अकारण हमला कर दिया। वह एक विशाल फौज लेकर गढ़–कटंगा में घुसा और दमोह तक आ पहुँचा। अपनी छोटी सी सेना के बल पर रानी दुर्गावती ने मुगलों को परास्त कर तीन बार अपने राज्य से खदेड़ने में कामयाबी हासिल की। परन्तु, मुगल फिर एकजुट हुए और 10,000 घुड़सवार, पैदल सेना और तोपखाने वाली सैन्य टुकड़ी के साथ पुनः आक्रमण किया एवं दुर्गावती को हरा दिया।

रानी दुर्गावती ने अत्यन्त बहादुरी का परिचय देते हुए तब तक जंग जारी रखी जब तक की एक तीर उनकी दाहिनी कनपटी पर और दूसरा तीर उनकी गर्दन पर न आ लगा। इसके बावजूद रानी ने दोनों तीरों को बाहर निकाला किन्तु वह बेहोश हो गईं। चेतना वापस आने पर उन्हें एहसास हुआ कि वे जंग हार चुकी थीं। उन्होंने अपने महावत अधर बाघेल से कहा कि वे अपना खंजर घोंपकर उनकी जान ले ले। बाघेल ने ऐसा करने से इनकार कर दिया और कहा कि वे, उन्हें किसी सुरक्षित स्थान तक ले जाएंगे। रानी दुर्गावती को एहसास हुआ कि वे इस प्रकार ज्यादा दूर तक नहीं जा पाएंगे और जल्द ही दुश्मन के हाथों में पड़ जाएंगे। तब, रानी ने अपना खंजर निकाला और उसे अपने सीने में उतार दिया। इस प्रकार, वीर रानी दुर्गावती ने अपने सम्मान की रक्षा करते हुए 24 जून, 1564 को मौत को गले लगा लिया। उनके सैनिकों ने जबलपुर से लगभग 12 मील दूर एक संकरे पहाड़ी दर्रे में पूरे सम्मान से उनका अंतिम संस्कार किया।

अकबर के इतिहासकार अबुल फजल और अन्य फारसी लेखकों ने अपनी रचनाओं में रानी दुर्गावती और मुगलों के बीच हुए युद्ध का वर्णन किया है। अबुल फजल ने रानी दुर्गावती के बारे में लिखा कि वे सौन्दर्य, गरिमा और साहस एवं बहादुरी की प्रतीक थीं। इसके कई वर्ष बाद ब्रिटिश कर्नल स्लीमैन द्वारा भी रानी दुर्गावती के इतिहास के बारे में लिखा गया। उन्होंने लिखा कि रानी दुर्गावती गढ़–कटंगा पर शासन करने वाले सभी राजाओं में से सबसे अधिक सम्मानित शासक रहीं।

जबलपुर में जिस जगह रानी दुर्गावती ने अपना जीवन बलिदान किया, उसी स्थान पर उनका स्मारक बनाया गया है। हर वर्ष 24 जून को वहां एक समारोह आयोजित किया जाता है, जिसे रानी दुर्गावती के सम्मान में 'बलिदान दिवस' या शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है। वर्ष 1983 में, जबलपुर विश्वविद्यालय का नाम बदलकर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय कर दिया गया और साथ ही, एक संग्रहालय का नाम भी उनके नाम पर रखा गया है।

वर्ष 1988 में, रानी दुर्गावती के सम्मान में एक डाक–टिकट जारी किया गया। वर्ष 2018 में, भारतीय तटरक्षक बल ने विशाखापत्तनम स्थित अपने जिला मुख्यालय में 'आईसीजीएस रानी दुर्गावती' नामक तीसरे इनशोर पैट्रोल पोत (आईपीवी) को कमिशन किया। तथापि, रानी दुर्गावती का चिरस्थायी स्मारक लोगों के मन में बसा है। आज भी लोग उन्हें सम्मान एवं श्रद्धा से याद करते हैं। उनकी कहानी एक ऐसी गाथा बन गई है, जो तमाम गीतों एवं कहानियों का केन्द्र बिन्दु है, और वह इन गीतों व कहानियों के जरिए वे आज भी लोगों के दिलों में बसी हैं।

डाक विभाग, रानी दुर्गावती की 500वीं जयंती पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है और राष्ट्रीय गौरव एवं बलिदान की प्रतीक इस महान हस्ती को श्रद्धांजलि अर्पित करता है, जो अमृतकाल के दौरान भी आज की युवा शक्ति के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

आभार :

डाक–टिकट / एफडीसी / विवरणिका / विरूपण कैशे : श्री शंख सामंत

पाठ : संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त जानकारी पर आधारित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक टिकटें	: 201600
Stamps Printed	: 201600
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00